

प्रेरक प्रसंग पिताश्री ब्रह्मा

बा बा के जीवन में ज्ञान और प्रेम के अद्भुत तालमेल के साथ जीवन के हर क्षेत्र में सन्तुलन था। वे देही-अभिमानि बनने पर तो पूरा जोर देते ही थे परन्तु देह के स्वास्थ्य और उसकी संभाल की अवहेलना करने को नहीं कहते थे। हाँ, वे यह तो कहते थे कि बार-बार शारीरिक अस्वस्थता की चर्चा करके हमें अपने श्वास वृथा नहीं गँवाने चाहिए क्योंकि आज जबकि प्रकृति तमोप्रधान है और हमने अज्ञानकाल में विकर्म भी किये हैं तो रोग और व्याधियाँ तो शायद आयेंगी ही, अतः उन्हीं में मन-बुद्धि लगाये रखने से तो हम शिव बाबा की याद के लिए समय निकाल ही नहीं पायेंगे। अतः वे कहते -बच्चे, दवा और दुआ दोनों से काम लो और रोग की अवस्था में भी योग को न भूलो वरना देह-अभिमान का संस्कार पक्का होता जायेगा। इस पर भी वे यह कहते कि यह शरीर मूल्यवान है, अतः इसे कोशिश करके ठीक रखो ताकि इस द्वारा ईश्वरीय सेवा भी कर सको और आपके योग-रूप पुरुषार्थ में विघ्न न पड़े।

इसी प्रकार, बाबा अच्छा भोजन खाने के लिए भी कहते हैं परन्तु साथ-साथ यह भी सम्मति देते कि अपने पेट-

बाबा का शिवबाबा से ऐसा तो ज्ञानयुक्त प्यार था कि वे हर परिस्थिति को निमित्त बनाकर उनकी याद मेकं रहते। वे कोई 'टोली' (प्रसाद) बाँटते तो भी पूछते- 'क्या शिवबाबा को याद किया है' और यदि कोई समस्या सामने आती तो भी कहते कि शिवबाबा को याद करो तभी पुरुषार्थ में पूर्णता आयेगी। जैसे किसी छोटे बच्चे को प्रातः जागते ही माँ की याद आ जाती है और उसके मुख से 'माँ-माँ' शब्द ध्वनित हो जाते हैं अथवा जैसे किसी प्रौढ़ व्यक्ति को अपने परिवार की सुधि बनी ही रहती है, वैसे ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा की प्रेम-विभोर स्मृति बनी ही रहती। इसीलिये वे सदा उस ही की

चर्चा करते। एक बार बाबा शरद ऋतु में वत्सों सहित पहाड़ी पर घूमने गये तो लौटने के समय तक धुन्ध इतनी बढ़ गयी कि दो फुट आगे का मार्ग भी दिखायी नहीं देता था। सभी थोड़ी देर रुके रहे ताकि धुन्ध कम हो जाये।

बा बा सदा खुशी में रहते और सदा ऐसी ही बातें सुनाते कि कोई मनुष्य कितना भी अशांत क्यों न हो, चाहे कितनी ही उलझनों में पड़ा हुआ हो, बाबा की मधुर मुस्कान को देखते ही उसकी उदासी और चिंता भाग जाती, खुशी का पारा चढ़ जाता। किसी ने भी कभी भी बाबा के चेहरे पर चिन्ता या उदासी की रेखा नहीं देखी। अतः बाबा पास व आसपास वातावरण में सदा खुशी की लहरें अथवा खुशी की खुशबू फैली रहती। उस पवित्र खुशी के

पालन पर ही अधिक खर्च न करो और पदार्थ खाओ भले ही परन्तु उनके प्रति आपमें आकर्षण नहीं होना चाहिए। अतः वे जीवन को शुष्क बनाने के लिए नहीं कहते परन्तु साथ-साथ सादगी, स्वच्छता और सात्विकता पर भी बल देते। कोई स्थान-बाग-बगीचा आदि घूमने या देखने के योग्य होते तो वे उसे देखने या वहाँ तक जाने के लिए मना न करते बल्कि कई बार स्वयं ही कहा करते कि जाकर उसे देख आओ परन्तु

दूसरी ओर वे यह भी कहते कि "बच्चों में घूमने और देखने का शौक या व्यर्थ की आदत नहीं होनी चाहिए।" वे कहते कि किसी ऐतिहासिक अथवा प्राकृतिक सौंदर्य के स्थान को देखो, उसको देखते हुए भी अपनी योग-स्थिति को मत छोड़ो और आने वाली सतयुगी सृष्टि के अतुल सौंदर्य को मत भूलो। अतः वे कहते कि सदा यह याद रखो कि शिव बाबा हमें जिस अद्भुत सतयुगी सृष्टि में ले जा रहे हैं, वह तो अतुलनीय है। उसकी आभा और शोभा, उसका सुख और सौंदर्य अद्वितीय है। इस प्रकार,

चर्चा करते। एक बार बाबा शरद ऋतु में वत्सों सहित पहाड़ी पर घूमने गये तो लौटने के समय तक धुन्ध इतनी बढ़ गयी कि दो फुट आगे का मार्ग भी दिखायी नहीं देता था। सभी थोड़ी देर रुके रहे ताकि धुन्ध कम हो जाये।

परन्तु धुन्ध और कोहरा कम हुए ही नहीं। तब बाबा ने मुस्कराते हुए सन्देशी को कहा - 'ध्यानावस्था में जाकर बाबा से कहो कि वापस जाना है, वहाँ सभी हमारी प्रतीज्ञा कर रहे होंगे, परन्तु रास्ता ही स्पष्ट दिखायी

वातावरण में माया की बातें तथा सांसारिक उलझनें भूल जाना मनुष्य के लिए स्वाभाविक ही है। वह वातावरण ही ऐसा हुआ करता है कि

शांति मीडिया

बाबा विचित्र रीति से संतुलन रखते और योग-स्थिति को बनाये रखने की ओर ध्यान दिलाते।

बाबा के जीवन के जिस पहलू की जितनी चर्चा करें, उतनी कम है। उनके मुख पर सदा मुस्कान होती परन्तु वे अन्तर्मुखी और गम्भीर भी होते, वे खूब टोली खिलाते और पिकनिक कराते परन्तु साथ-साथ वे बाजार के खान-पान से मन हटा देते और मन की तृष्णाओं को भी शांत करा देते, वे अथक रीति से सेवा करने तथा कर्म करने में प्रवृत्त करते परन्तु वे उतना ही ध्यान अपनी मनोस्थिति और अपने परम पुरुषार्थ पर दिलाते और अलबेलेपन से होने वाली अवर्णनीय क्षति के प्रति भी सचेत करते, वे मनोविनोद तथा खेल-मेल में भी ले जाते परन्तु उतनी ही महत्ता वे विदेहावस्था, उपराम अवस्था तथा मौनावस्था को भी देते। इस प्रकार, एक निराला और सर्वांगीण व्यक्तित्व था बाबा का जो प्रेरक था, आकर्षक भी था, आदर्श भी था, व्यवहारिक भी था, लौकिक चर्चा में भी कुशलता लिए हुए था और अलौकिक तथा पारलौकिक दृष्टिकोण से भी सर्वश्रेष्ठ था।

नहीं देता..." सन्देशी अव्यक्त स्थिति में, ध्यानावस्था में गयी और उसने बाबा को यह बात कह सुनायी...। इस प्रकार बाबा लौकिक स्थूल परिस्थितियों को भी बाबा शिवबाबा की याद के निमित्त बना लेते। बस बाबा, बाबा, प्यारे बाबा, मीठे बाबा ही की याद उनके मन में बनी रहती। जैसे रात्रि को दो घनिष्ठ दोस्त, छोटे बालक सोने के लिए अपने-अपने घर चले जाते हैं और प्रातः होते ही फिर एक-दूसरे से विदा न होते। प्रातः दो-ढाई बजे तो बाबा उठ जाते परन्तु वे तो कहा करते कि मैं बाबा ही के साथ सोता हूँ। यह प्यार और याद का कैसा ताँता और नाता है।

ईश्वरीय कुल के हो...', इस प्रकार बाबा बच्चों को सदा खुशी और उल्लास में लाते रहते और कहते - 'बच्चे! माया के विघ्न बहुत आयेंगे, तूफान बहुत आयेंगे परन्तु घबराना मत और हिम्मत नहीं हारना। अब जबकि आपने शिव बाबा को हाथ दिया है तो आपका अकल्याण नहीं हो सकता। अब आपकी 'चढ़ती कला' है इसलिए सदा यह सोचते हुए चलो कि सर्व समर्थ शिव बाबा हमारे साथ है। ऐसा निश्चय रखने से आत्मा की विजय होती है।



भिलाईनगर। ब्र.कु.हेमा, ब्र.कु.राधिका, बीईसी ग्रुप ऑफ कम्पनीज के अध्यक्ष ब्र.कु.योगिनी, भिलाई स्टील प्लांट के एमके बिन्दु, एसके गुलाटी मंचासीन हैं।



नई दिल्ली। जी न्यूज द्वारा दिये गये 'माय अर्थ, माय ड्यूटी' अवार्ड से ब्र.कु. मृत्युंजय व ब्र.कु.कोमल को सम्मानित करते हुए भारत सरकार के केन्द्रीय युवा एवं खेल मामलों के संयुक्त सचिव राकेश मोहन व जी न्यूज के मार्केटिंग प्रमुख रोहित कुमार।



राहुरी। शाश्वत यौगिक खेती कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए डॉ.सुभाष मेहेत्रे, अण्णा साहेब, ब्र.कु.मनीषा, ब्र.कु.राजू, डॉ.शिवाजी राव पोखरकर, ब्र.कु.नलिनी।



श्रीनगर। दूरदर्शन की डायरेक्टर शामी शायर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.भारतभूषण, ब्र.कु.ज्योति तथा ब्र.कु.अंजु।



भैरहवा (नेपाल)। जिलाधिकारी लक्ष्मण कुमार थापा, जिला विकास अधिकारी नारायण ज्ञवाली, एसपी उल्लमराज थनेत, ब्र.कु.शांति व ब्र.कु.भूपेन्द्र मंचासीन हैं।



देहरादून। प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम में श्रमायुक्त सीताराम मीणा, जिलाधिकारी अनिल कुमार, ब्र.कु.रामनाथ, ब्र.कु.प्रेम दीदी, ब्र.कु.विनोद, डॉ.सीमा तथा अन्य।